तस्वीरों में गांधी

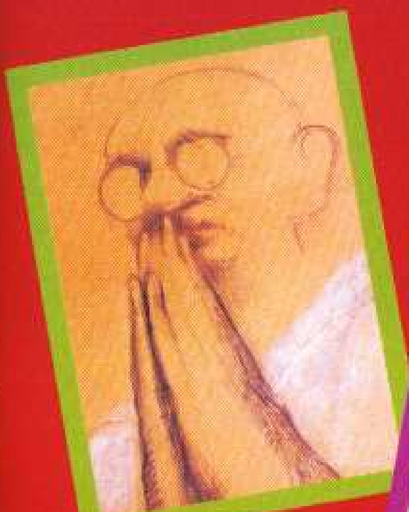

संध्या राव

अनुवाद अरविंद गुप्ता

Tulika

तस्वीरों में गांधी

संध्या राव
अनुवाद अरविंद गुप्ता

For Amma, for everything. - S

Thanks to

Gandhi Smriti and Darshan Smriti for permission to access and use the photographs; Sahmat, for permission to use pictures by the artists Nilima Sheikh, Amit Ambalal, K. M. Adimoolam, Prem Singh, Nand Katyal, Nalini Malani, Arpana Caur and Gulammohammad Sheikh; Ashok Rajagopalan; Akshay Bakaya

Tasveeron mein gandhi (Hindi)
ISBN 978-81-8146-377-7
© Tulika Publishers
First published in India 2007
originally in English

paper-cuts Niveditha Subramaniam
design Radhika Menon

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or used in any form or by any means — graphic, electronic or mechanical — without the prior written permission of the publisher.

Published by
Tulika Publishers, 13 Prithvi Avenue, Abhiramapuram, Chennai 600 018, India
email tulikabooks@vsnl.com website www.tulikabooks.com

Printed and bound by
Sudarsan Graphics, 27 Neelakanta Mehta Street, T. Nagar, Chennai 600 017, India

For more information about Tulika or to order books visit our website www.tulikabooks.com

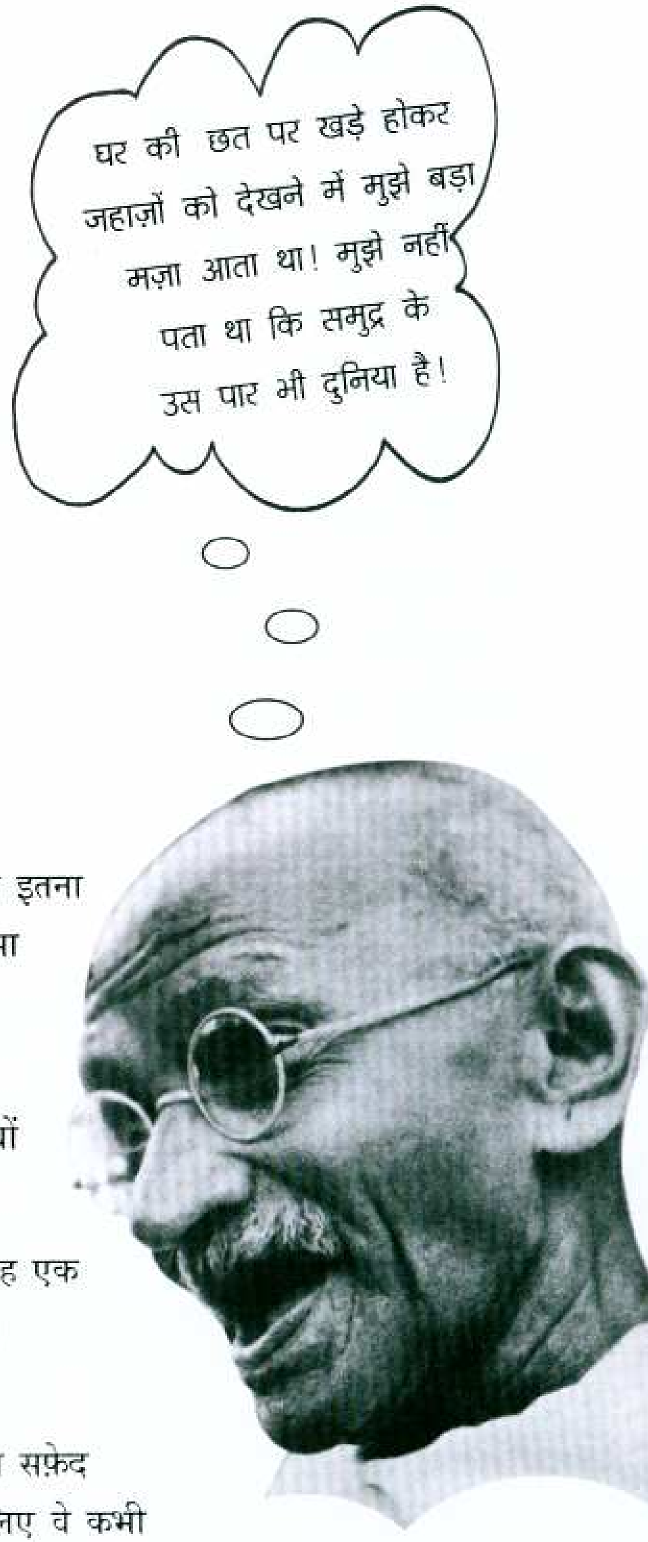

बहुत समय पहले की बात है। एक आदमी था जिसका जीवन इतना साधारण था कि जब उसकी मृत्यु हुई तब उसके पास एक पैसा तक न था। वह आदमी शांतिप्रिय था और सत्य व प्रेम में उसकी आस्था थी।

बहुत समय पहले यह आदमी भी एक लड़का था – सब बच्चों की तरह एक बच्चा।

इसी घर में 2 अक्टूबर 1869 को गांधीजी का जन्म हुआ। यह एक सफ़ेद घर है, पोरबंदर, गुजरात में, अरब महासागर के पास। यहाँ के बहुत से घर सफ़ेद मुलायम पत्थर के बने होते हैं।

जब वे छोटे थे, तब अपनी बहन या दाई के साथ वे इस शांत सफ़ेद शहर में घूमने जाते। उन्हें अँधेरे से बहुत डर लगता था। इसलिए वे कभी अकेले में नहीं रहना चाहते थे।

इस फ़ोटो में वे सात साल के हैं। वे क्या सोच रहे हैं? इतने गंभीर क्यों लग रहे हैं? कुछ अमरूदों को तोतों ने चोंच मारी है। शायद उन्हीं की मलहम-पट्टी करने की सोच रहे हैं?

गांधीजी के बचपन के बहुत कम फ़ोटो हैं, क्योंकि उस ज़माने में कैमरे ही कम थे!

महात्मा गांधी का पूरा नाम था मोहनदास करमचंद गांधी। उनकी माँ उन्हें मोहनिया बुलाती थीं। बचपन में मोहनिया बहुत शर्मीला था। उन्हें अभी भी अँधेरे से डर लगता था।

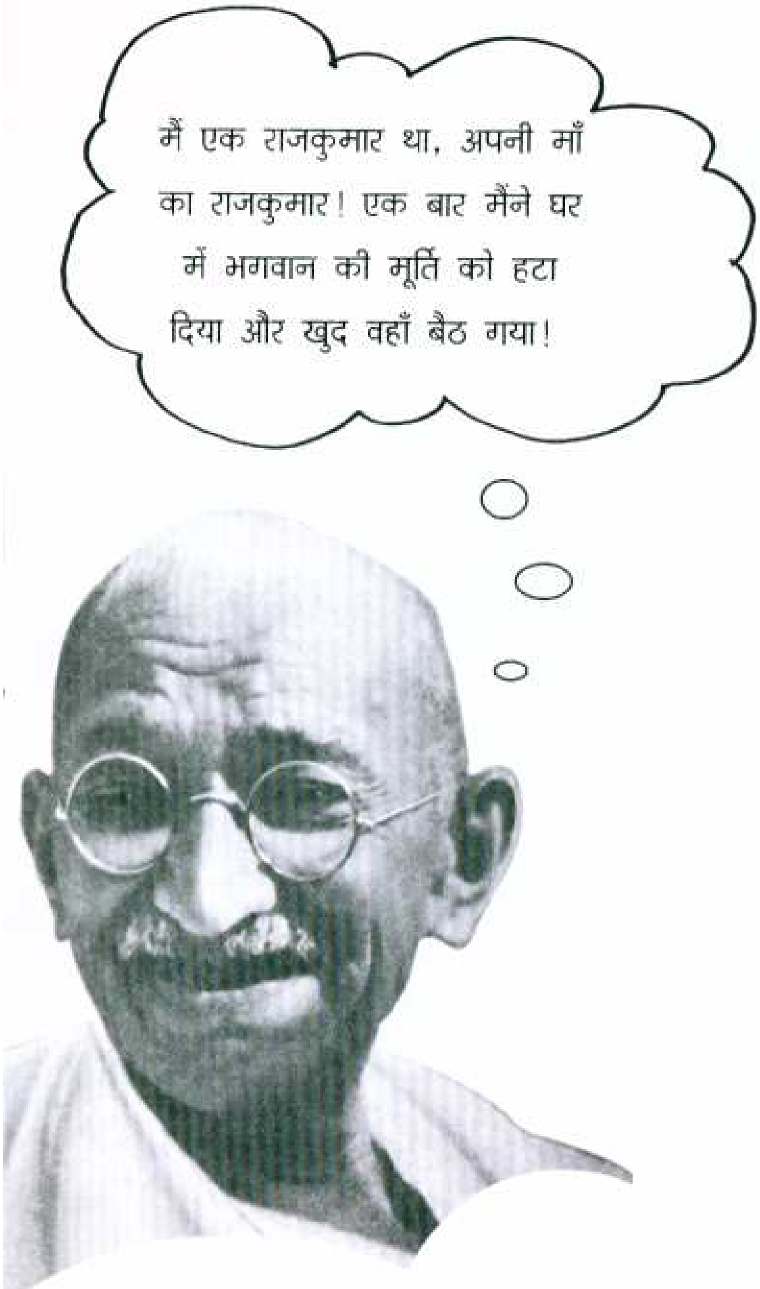

उनकी माँ का नाम पुतलीबाई था। पुतलीबाई मोहनिया के पिता करमचंद की चौथी पत्नी थीं। करमचंद पढ़े-लिखे नहीं थे, पर वे अच्छी नौकरी पर थे और उनके परिवार का गुज़ारा आराम से चलता था।

मोहनिया को स्कूल जाना पसंद नहीं था। वे दिन भर अपनी माँ के साथ ही रहना चाहते थे। वे पढ़ाई में भी कुछ तेज़ नहीं थे, ख़ासकर गुणा-भाग में।

गांधीजी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि उन्हें अपने स्कूल के दिनों की ज़्यादा बातें याद नहीं। पर शिक्षकों को बच्चे किन-किन नामों से चिढ़ाते थे, यह उन्हें ज़रूर याद था!

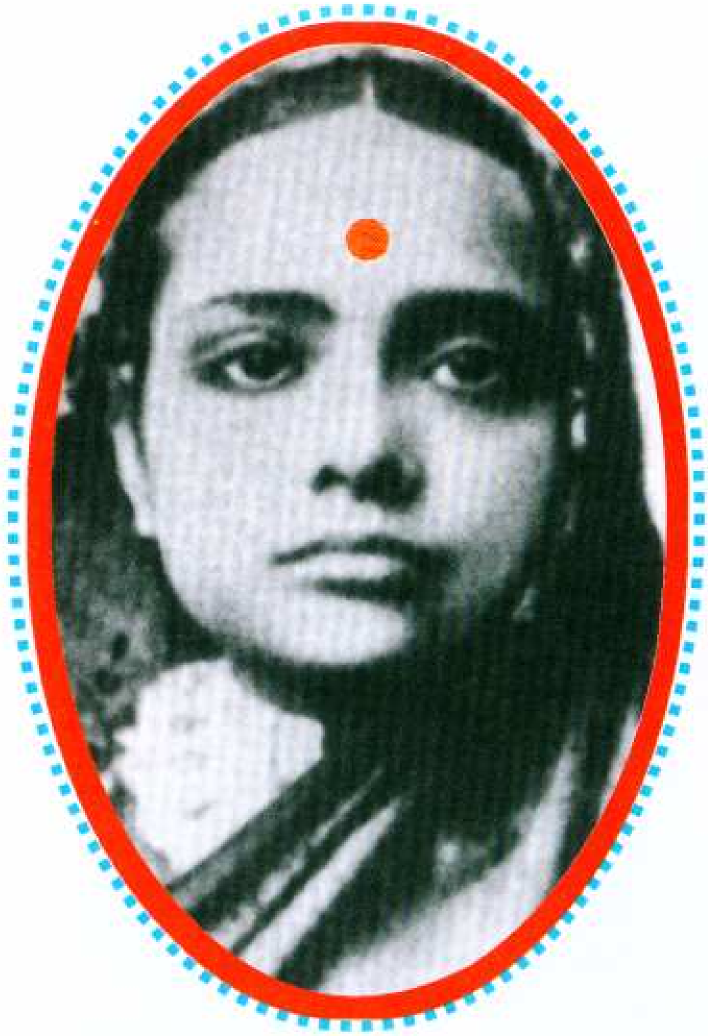

यह हैं कस्तूर, गांधीजी की पत्नी। इस फ़ोटो में वह 16 साल की हैं। गांधीजी यहाँ 14 साल के हैं। दोनों की उम्र 13 साल की थी जब उनके माता-पिता ने उनकी शादी कर दी – मोहनदास करमचंद गांधी और कस्तूर कापड़िया।

गांधीजी शादी से ख़ुश थे। उन्हें हर समय खेलने के लिए अब एक साथी जो मिल गया था। वे कस्तूर को अक्सर चिढ़ाते क्योंकि वे स्कूल जाते थे और कस्तूर नहीं। पर जल्दी ही उन्हें समझ आ गया कि चिढ़ाने का कोई फ़ायदा नहीं, क्योंकि कस्तूर अपनी मर्ज़ी पर चलती और चिढ़ाने की परवाह ही न करती।

एक बात और। मोहन को अँधेरे से डर लगता था, कस्तूर को नहीं।

स्कूल खत्म करने के बाद, उन्होंने कालेज जाने से इनकार कर दिया क्योंकि कालेज उन्हें अच्छा नहीं लगा। अब आगे क्या करना है, यह उन्हें पता नहीं था।

सन् 1886 में उनके पिताजी की मृत्यु हो गई। फिर 1888 में कस्तूर ने पहले पुत्र को जन्म दिया और उन्होंने उसका नाम रखा हरिलाल।

इस फ़ोटो में गांधीजी 17 साल के हैं और साथ में उनके बड़े भाई लक्ष्मीदास हैं। गांधीजी की दो सौतेली बहनें, एक सगी बहन, और दो भाई थे। वे सबसे छोटे थे।

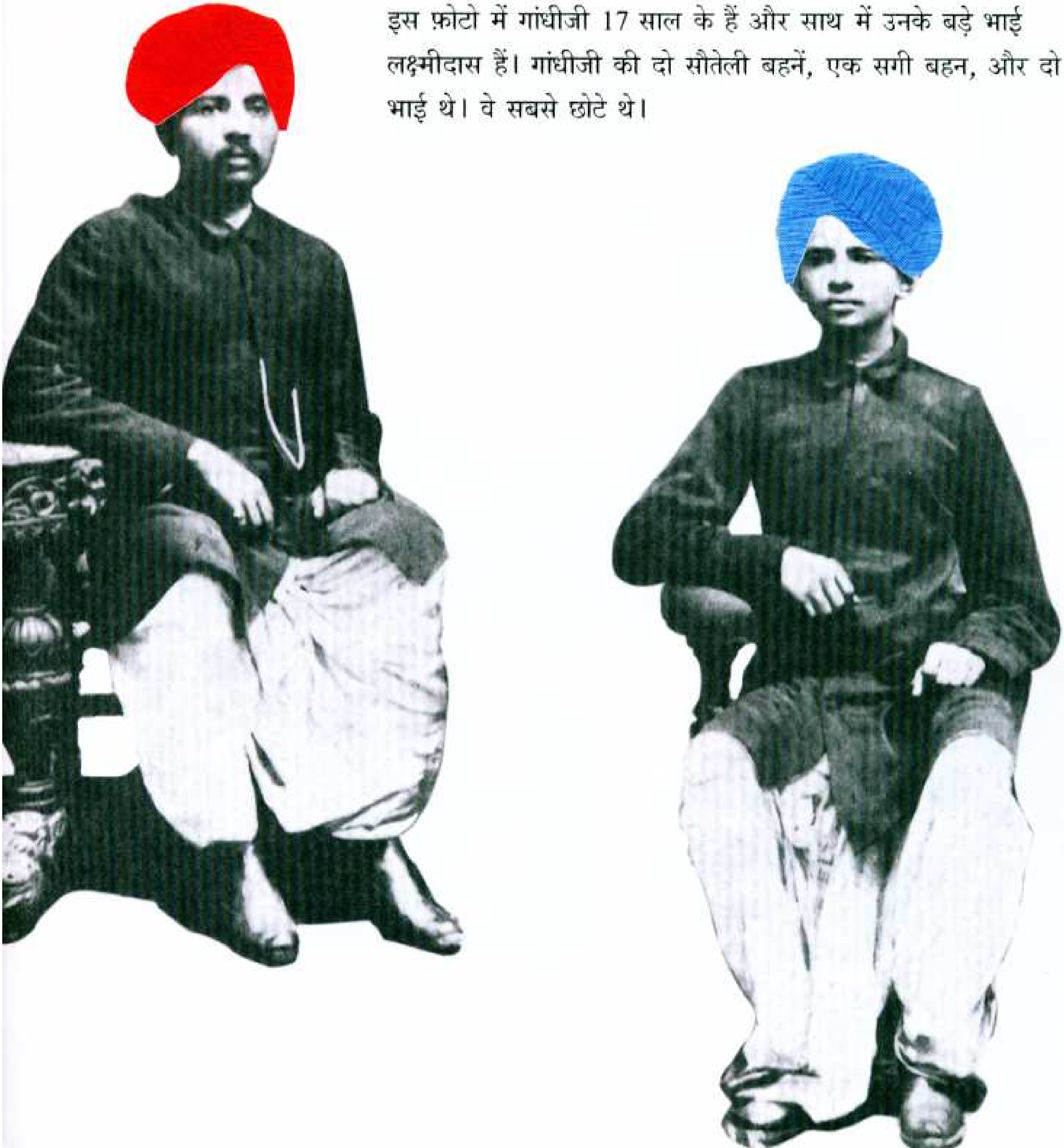

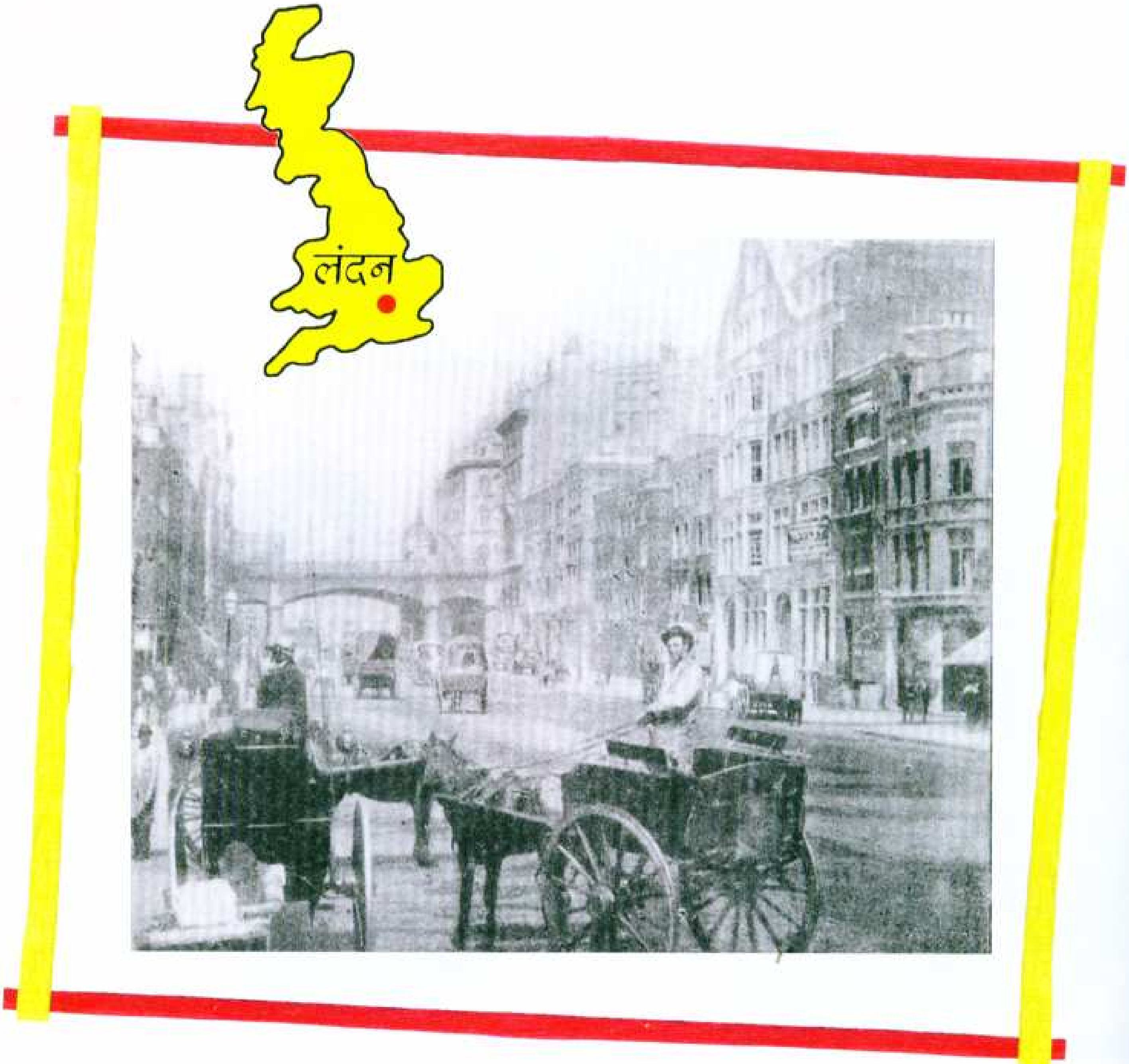

तुम इंग्लैंड जाकर वकालत क्यों नहीं सीखते, एक मित्र ने सुझाव दिया।

गांधीजी को यह बात पसंद आई। विदेश जाने की संभावना से वे उत्सुक हुए। इसलिए उन्होंने अपना बोरिया-बिस्तर बाँधा, कस्तूर और बच्चे को अलविदा कहा, और बंबई से जहाज़ में रवाना हो गए। 57 दिनों की यात्रा के बाद वे इंग्लैंड पहुँचे।

गांधीजी जब इंग्लैंड पहुँचे तो लंदन की सड़कें ऐसी हुआ करती थीं।

यहाँ घर जैसा कुछ नहीं था। गांधीजी बहुत शर्मीले थे और उनका कोई मित्र भी नहीं था।

इसलिए उन्होंने दूसरों की तरह बनने की कोशिश की। स्टाइल के कपड़े पहने, काँटे-छुरी से खाना सीखा। यहाँ तक कि उन्होंने नाचना और वायलिन बजाना भी सीखा।

गांधीजी ने अपनी माँ से वादा किया था कि वे मांस नहीं खाएँगे। इस कारण उन्हें अक्सर भूखा रहना पड़ता था। उन दिनों विलायत में शाकाहारी भोजन मुश्किल से मिलता था।

इस फ़ोटो में वे वेजिटेरियन सोसायटी के सदस्यों के साथ आगे, काले सूट में बैठे हैं।

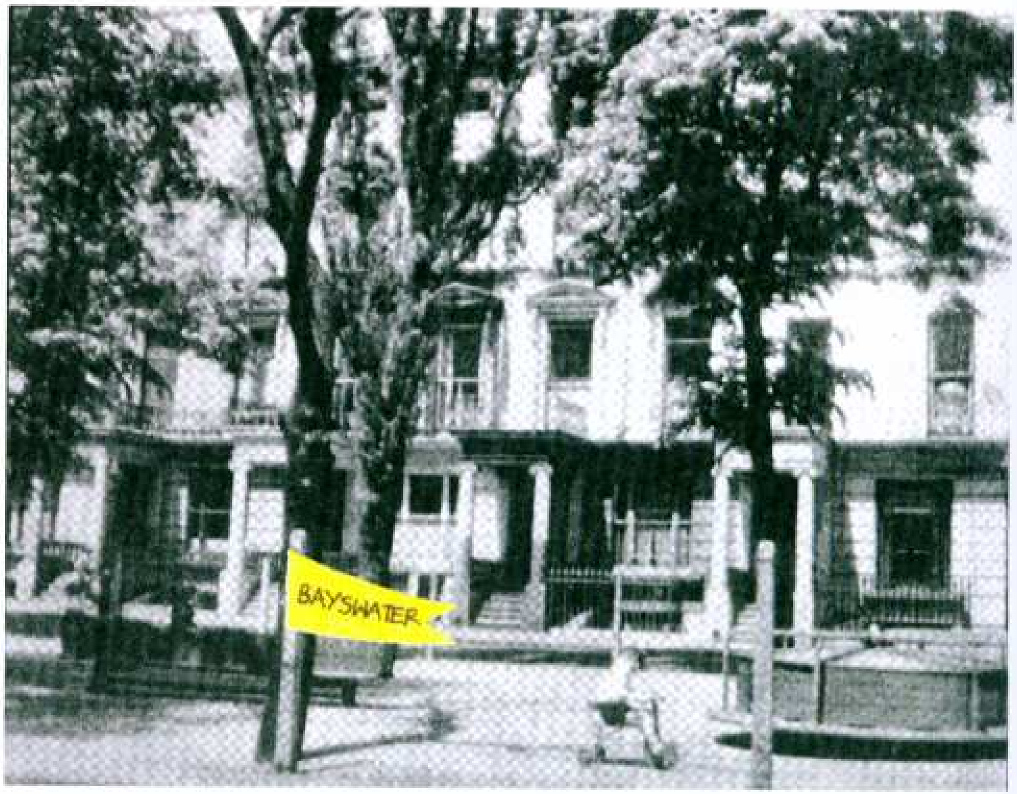

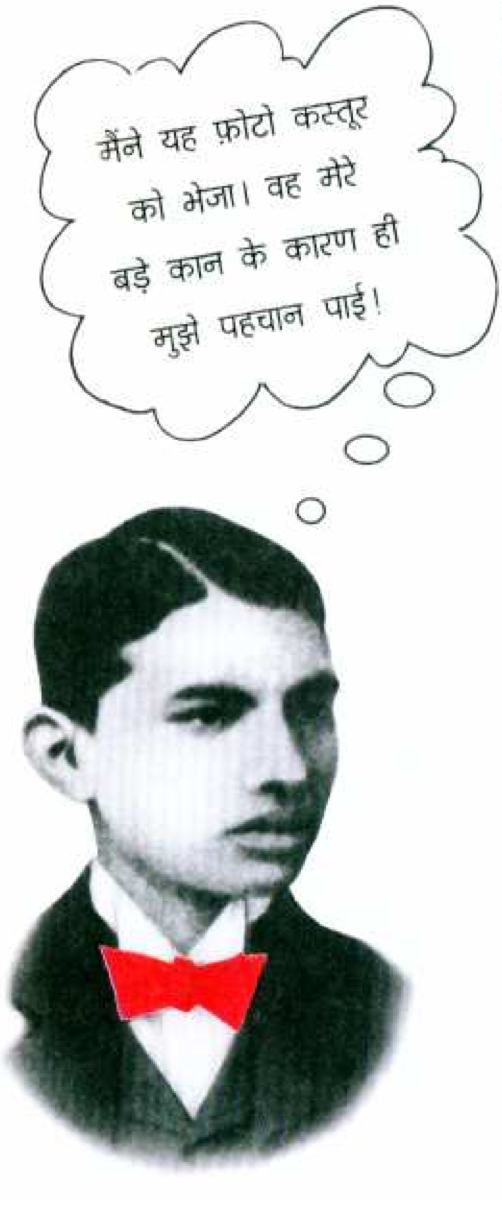

आखिर उन्हें कुछ शाकाहारी लोग मिल ही गए और एक शाकाहारी रेस्ट्राँ भी जिसका नाम था 'द सेंट्रल'! गांधीजी ने वेजिटेरियन सोसायटी के लिए यह स्मारक चिन्ह भी डिज़ाइन किया।

उन्होंने अपने लिए साधारण-सा खाना पकाना सीखा और ज़रूरत के अनुसार ही खाने लगे।

वे दर्शन और धर्म की किताबें पढ़ते, और वकालत की पढ़ाई मेहनत और लगन से करते। उन्हें लैटिन का विषय बहुत कठिन लगता था पर फिर भी उन्होंने वकालत की परीक्षा पास की। इस बीच उन्होंने मैट्रिक्यूलेशन भी पास किया और अपनी अंग्रेज़ी को बेहतर किया।

अब उनकी उम्र 21 वर्ष की थी। इंग्लैंड में वे तीन साल बिता चुके थे। विलायत छोड़ने से पहले वे लंदन में रहते थे यहाँ: 52 बेस्वाटर में।

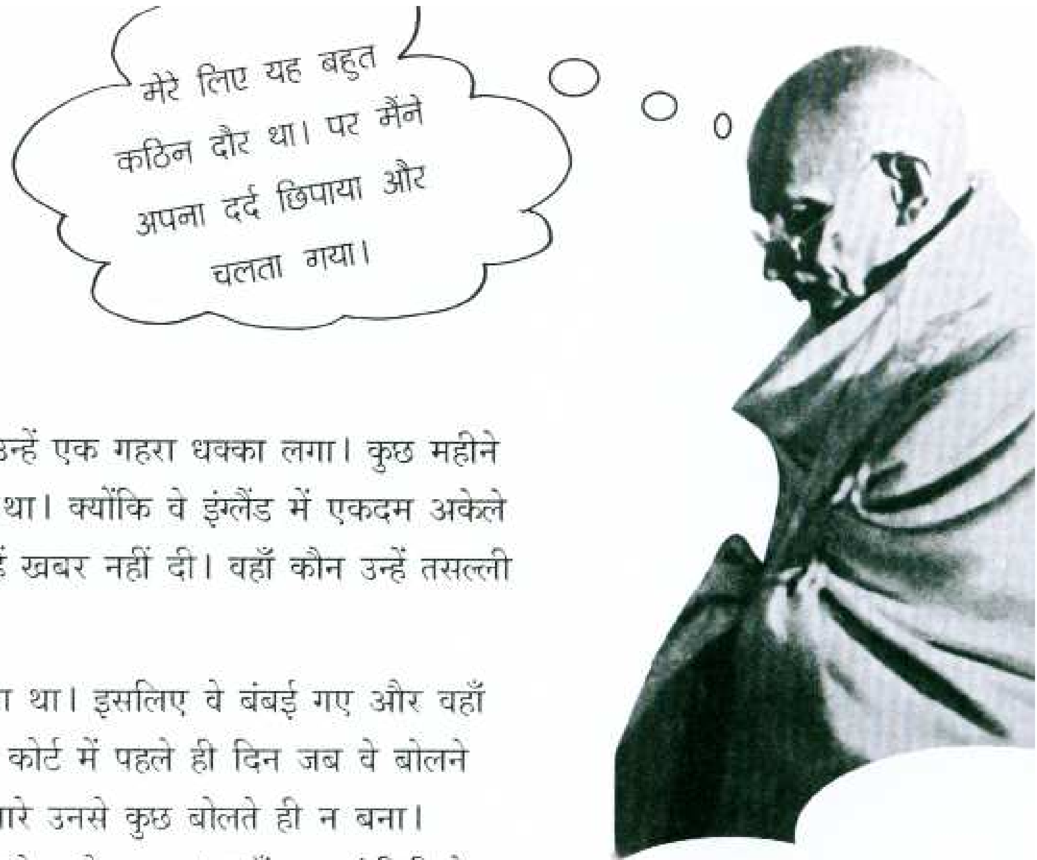

जब गांधीजी वापस भारत लौटे तो उन्हें एक गहरा धक्का लगा। कुछ महीने पहले उनकी माँ का देहांत हो चुका था। क्योंकि वे इंग्लैंड में एकदम अकेले थे, इसलिए परिवार के लोगों ने उन्हें खबर नहीं दी। वहाँ कौन उन्हें तसल्ली दिलाता? गांधी अत्यंत दुखी हुए।

अब उन्हें अपने परिवार को संभालना था। इसलिए वे बंबई गए और वहाँ उन्होंने वकालत शुरु की। बंबई हाई कोर्ट में पहले ही दिन जब वे बोलने के लिए खड़े हुए, तो घबराहट के मारे उनसे कुछ बोलते ही न बना। बस, अपना सामान बाँधा और राजकोट लौट आए। वहाँ पर गांधीजी के भाईयों ने उनके लिए छोटे-मोटे काम ढूँढ़े।

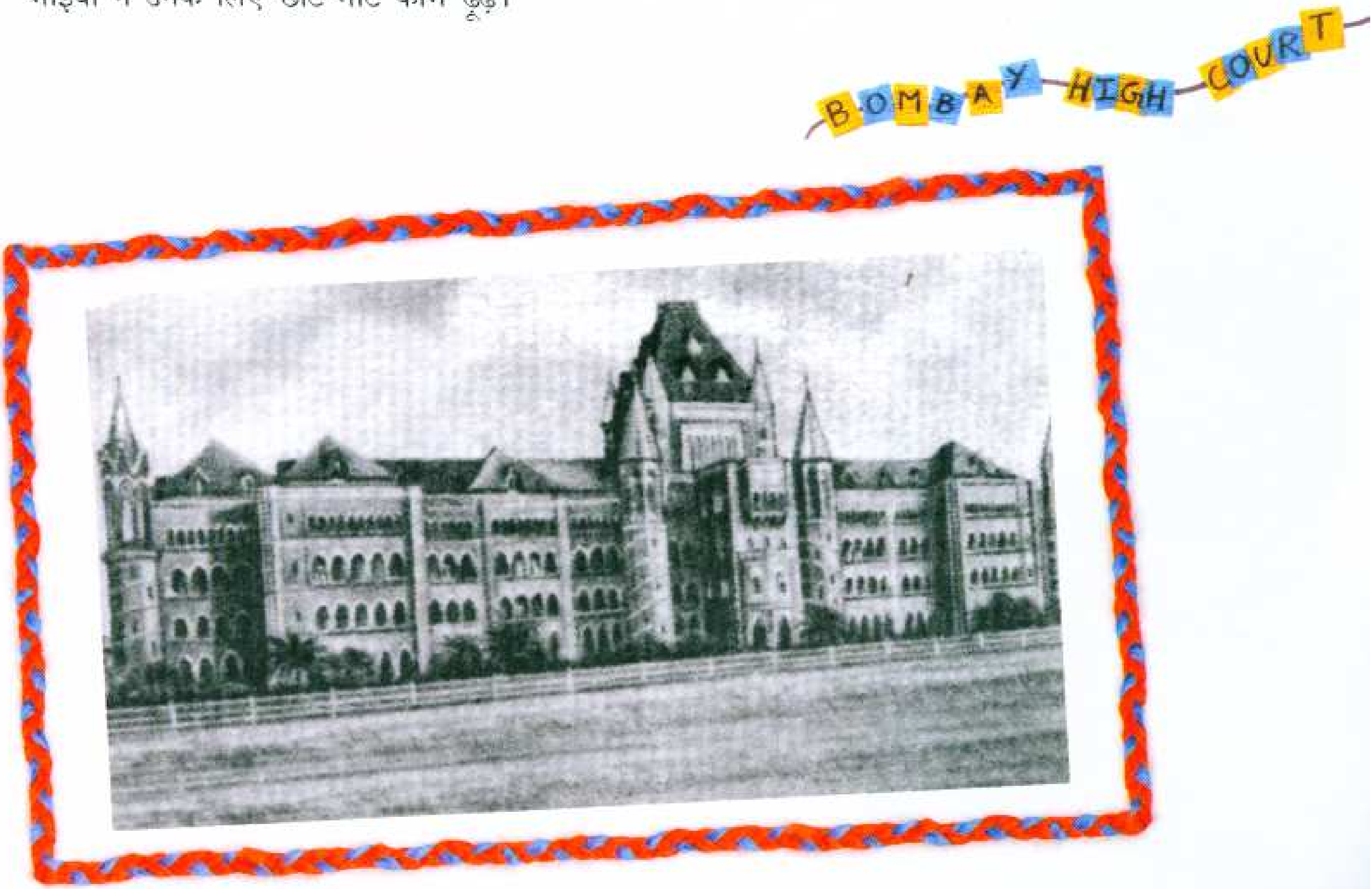

इस तरह कुछ महीने बीते। फिर उन्हें ख़बर मिली कि दक्षिण अफ्रीका में किसी व्यापारी को एक वकील की तलाश है। व्यापारी का नाम था दादा अब्दुल्ला शेठ। वे डरबन में रहते थे। उन्हें साल भर के लिए वकील की ज़रूरत थी। दक्षिण अफ्रीका काफ़ी दूर था फिर भी गांधीजी ने वहाँ जाने का निर्णय लिया।

यह बात अप्रैल 1893 की है। अब उनके और कस्तूर के दो बेटे थे – हरिलाल और मणिलाल। गांधीजी पूरे परिवार को छोड़कर एक बार फिर जहाज़ पर रवाना हुए।

मई के अंत में वे डरबन पहुँचे और वहाँ उन्होंने फौरन अपना काम शुरू कर दिया। उस समय वे फ़ोटो में दिखाया फ्रॉक-कोट पहनते और पगड़ी बाँधते थे। इंग्लैंड के मुकाबले अब वे काफ़ी अलग दिखते थे!

जज ने उन्हें देखते ही कहा: अपनी पगड़ी तुरंत उतारो!

पर भारत में सिर ढकने की एक परंपरा थी। गांधीजी ने उत्तर दिया: नहीं उतारूँगा! और वे कोर्ट से बाहर चले आए।

इस घटना के बारे में उन्होंने अखबारों में लिखा। यह समाचार तेज़ी से फैला।

दक्षिण अफ्रीका आने के एक हफ़्ते बाद ही गांधीजी को प्रिटोरिया जाना पड़ा। उनके पास फर्स्ट क्लास का टिकट था और वे ट्रेन में अपनी जगह पर बैठ गए। कुछ देर बाद ट्रेन चली। जब ट्रेन पीटरमारिट्सबर्ग स्टेशन पर रुकी तो एक पुलिसवाले ने आकर गांधीजी से कहा, तुम इस डिब्बे में सफ़र नहीं कर सकते।

मेरे पास टिकट है, गांधीजी ने कहा। पुलिसवाले ने गांधीजी को डिब्बे से नीचे खदेड़कर प्लैटफार्म पर पटक दिया।

उस रात ठंडे वेटिंग रूम के अँधेरे में अकेले बैठे गांधीजी ने डरबन के जज के बारे में सोचा। दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों से किस तरह का बर्ताव किया जा रहा है, उसके बारे में सोचा। लोग मुझे नीचा क्यों दिखा रहे हैं, उन्होंने सोचा। इसलिए कि मैं गोरा नहीं हूँ?

वेटिंग रूम में बैठे-बैठे उन्होंने खुद से कई सवाल पूछे: क्या मैं यही चाहता हूँ? धक्के खाना? डरना? मेरा कर्तव्य क्या है?

उस रात के बाद उन्हें अँधेरे से डर लगना बंद हो गया।

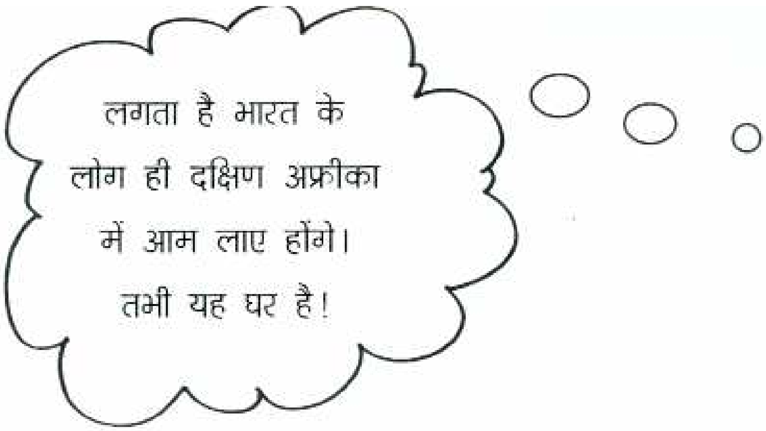

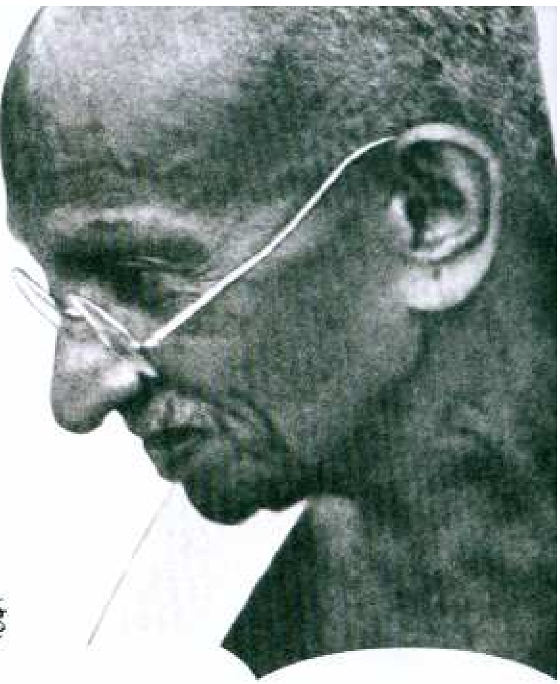

1860 से बहुत से भारतीयों को खेतों और खदानों में काम करने के लिए दक्षिण अफ्रीका लाया गया। इन्हें न कोई स्वतंत्रता थी न ही कोई अधिकार। उनके साथ गुलामों जैसा व्यवहार होता था।

गांधीजी ने दादा अब्दुल्ला का काम खत्म करने के बाद दक्षिण अफ्रीका में रहकर वहाँ के भारतीयों की मदद करने की ठानी। जब गांधीजी ने उनकी समस्याओं को उठाया तो भारतीयों का हौसला बढ़ा। गांधीजी की मदद से भारतीयों ने अपने अधिकारों की लड़ाई के लिए नेटाल इंडियन कांग्रेस की स्थापना की।

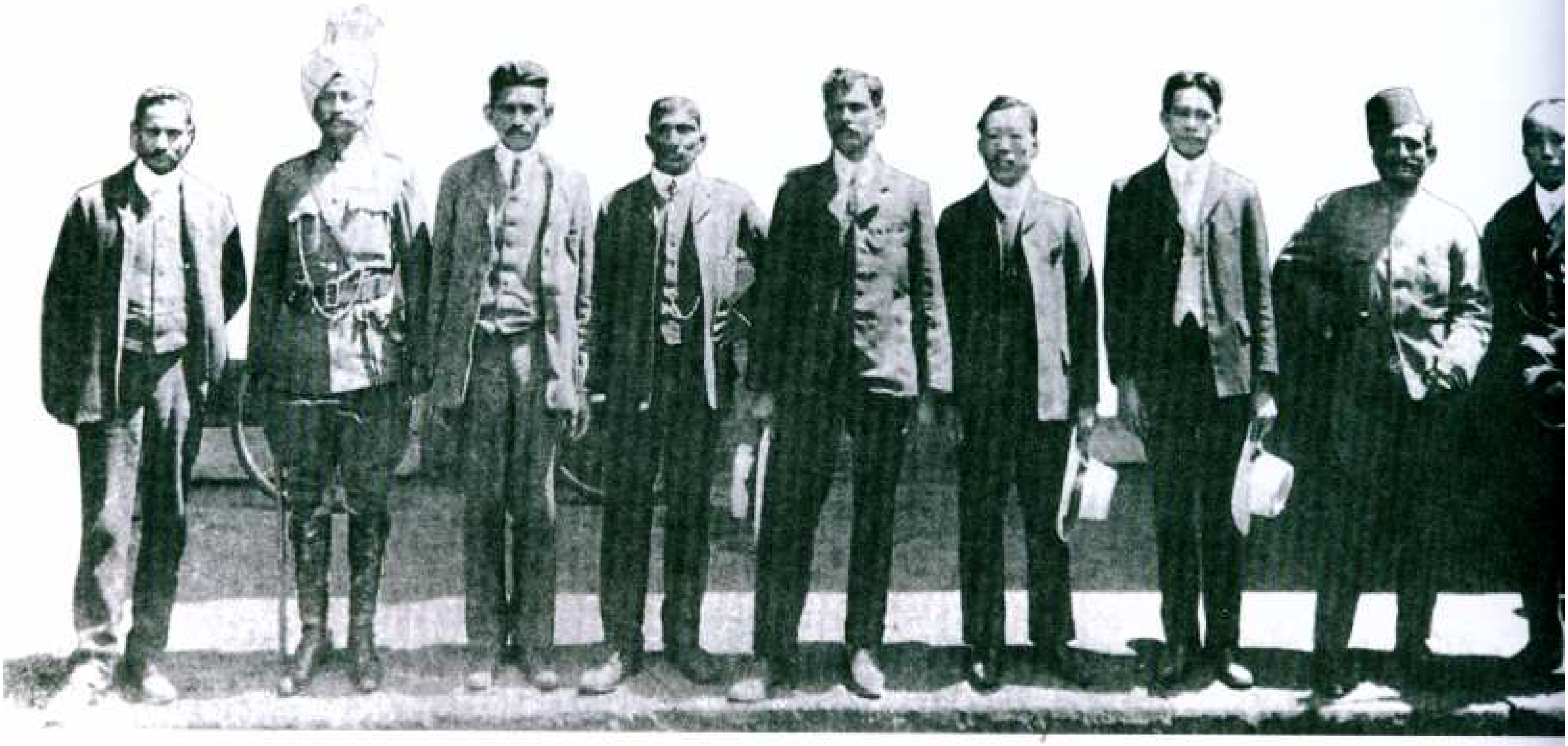

गांधीजी ने डरबन में अपना दफ़्तर खोला। इस प्रकार रोज़ी कमाने के साथ-साथ वे लोगों की मुफ़्त में मदद भी कर सकते थे। यह बात सन् 1894 की है। फ़ोटो में गांधीजी की टीम, और उनके कई मित्र, उनके दफ़्तर के सामने खड़े हैं। गांधीजी अब कामयाब भी थे और फ़ैशनेबिल भी।

इस बीच कस्तूर और उनके दोनों बेटे भारत में उनका इंतज़ार करते रहे। कस्तूर को उनकी बहुत याद आती। बेटे अपने पिता को बहुत कम ही जानते थे। गांधीजी पर काम का इतना बोझ था कि वे अपने परिवार को 1896 में ही दक्षिण अफ़्रीका ला पाए।

तब तक गांधीजी एक जाने-माने नेता बन चुके थे। धीरे-धीरे भारत में भी उनकी शोहरत फैलने लगी।

1885 में भारत में एक राजनैतिक संगठन बना, इंडियन नैशनल कांग्रेस। गोपालकृष्ण गोखले, बालगंगाधर तिलक, सुरेंद्रनाथ बैनर्जी, बदरुद्दीन तैयबजी, फ़िरोज़शाह मेहता, जी. ए. नटेशन और अन्य प्रतिष्ठित लोग इस संगठन के सदस्य थे। इनमें से बहुत से लोग गांधीजी से मिले और उनसे दक्षिण अफ्रीका की कहानियाँ सुनीं।

जब गांधीजी अपने परिवार को लेने भारत आए तब उन्होंने एक लेख लिखा। लेख में दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों के दयनीय हाल का वर्णन था। क्योंकि उस लेख का कवर हरे रंग का था इसलिए उसे ग्रीन पैम्फलेट के नाम से जाना गया। अखबार वालों ने ग्रीन पैम्फलेट की सूचना को वापस दक्षिण अफ्रीका भेजा। दुर्भाग्यवश उन्होंने रिपोर्ट को तोड़ा-मरोड़ा और उसमें वह बातें जोड़ीं जो ग्रीन पैम्फलेट में थीं ही नहीं। यह खबरें अफ़वाहों की तरह दक्षिण अफ्रीका में फैलने लगीं।

जब जहाज़ एस. एस. कोरलैंड ने डरबन बंदरगाह पर लंगर डाला, तब एक उग्र भीड़ वहाँ गांधीजी का इंतज़ार कर रही थी। कस्तूर और बच्चों के उतरने तक सब कुछ शांत था। परंतु लोगों ने जैसे ही गांधीजी को देखा उन्होंने चिल्लाना शुरू कर दिया: घेर लो! मारो! लोगों ने गांधीजी पर सड़ी मछलियाँ और अंडे फेंके और उन पर लाठियों और पत्थरों की बौछार की!

किस्मत से, पुलिस चीफ़ की पत्नी श्रीमती आर. सी. ऐलेक्ज़ेन्डर उसी समय आसपास टहलने आई हुई थीं। वे अपनी छतरी खोलकर उपद्रवियों और गांधीजी के बीच खड़ी हो गईं।

बाद में जब पुलिस ने पूछताछ की, तो गांधीजी ने हमलावरों का नाम बताने से इनकार कर दिया।

कोई भी काम
संभव है अगर आपका इरादा
पक्का हो, और आप उसके
बारे में सब कुछ पढ़ें।

एक दिन गांधीजी के मित्र हेनरी पोलक ने उन्हें ट्रेन में पढ़ने के लिए एक पुस्तक दी – जॉन रस्किन की लिखी *अनटू दिस लास्ट*। गांधीजी पर इस पुस्तक का इतना प्रभाव पड़ा कि उन्होंने रस्किन के सुझाए अनुसार जीवन जीने की ठानी – मिलजुल कर समुदाय में रहना, अपने हाथों से खेती करना और हर काम को खुद करना। इस प्रकार गांधीजी और कुछ अन्य लोग डरबन के निकट 'फ़ीनिक्स सेटिलमेंट' में रहने लगे।

यहाँ पर लोग सारा काम खुद करते, शौचालय की सफ़ाई तक। वे खेती करते। एक अख़बार भी छापते। यह एक सरल जीवन शैली थी। गांधीजी ने बच्चों को वह सभी बातें सिखाईं जो वे खुद जानते थे या जो उन्होंने सीखीं थीं। यहाँ कस्तूरबा सभी की माँ थीं। सभी लोग उन्हें 'बा' कहकर बुलाते।

इस बीच 1897 में रामदास का और 1900 में देवदास का जन्म हुआ। प्रसव के दौरान कैसे सहायता करनी चाहिए गांधीजी ने इसके बारे में पढ़ा था। इसलिए देवदास को जन्म देने में वे कस्तूरबा की मदद कर पाए।

कुछ साल बाद गांधीजी के एक जर्मन मित्र हरमन कैलनबाख़ ने जोहानसबर्ग के पास उन्हें थोड़ी-सी ज़मीन भेंट की। गांधीजी ने वहाँ भी डेरा बसाया और उसका नाम प्रसिद्ध रूसी लेखक लेव टोल्सटॉय के नाम पर 'टोल्सटॉय फ़ार्म' रखा। गांधी और टोल्सटॉय दोनों एक-दूसरे के प्रशंसक थे और आपस में चिट्ठियाँ भी लिखते थे।

यह फ़ोटो गांधीजी, कैलनबाख़ और उनकी सचिव सोनिया श्लेसिन का है। इसके पीछे एक कहानी है। हरमन कैलनबाख़ को यह फ़ोटो बेहद पसंद था। 1914 में जब पहला महायुद्ध छिड़ा तो उन्होंने इस फ़ोटो को मोड़कर अपने कोट के अस्तर के अंदर सी दिया, जिससे कि कोई उनसे यह फ़ोटो छीन न सके। फ़ोटो में जो लाइनें दिख रही हैं वे उन्हीं मोड़ों के निशान हैं।

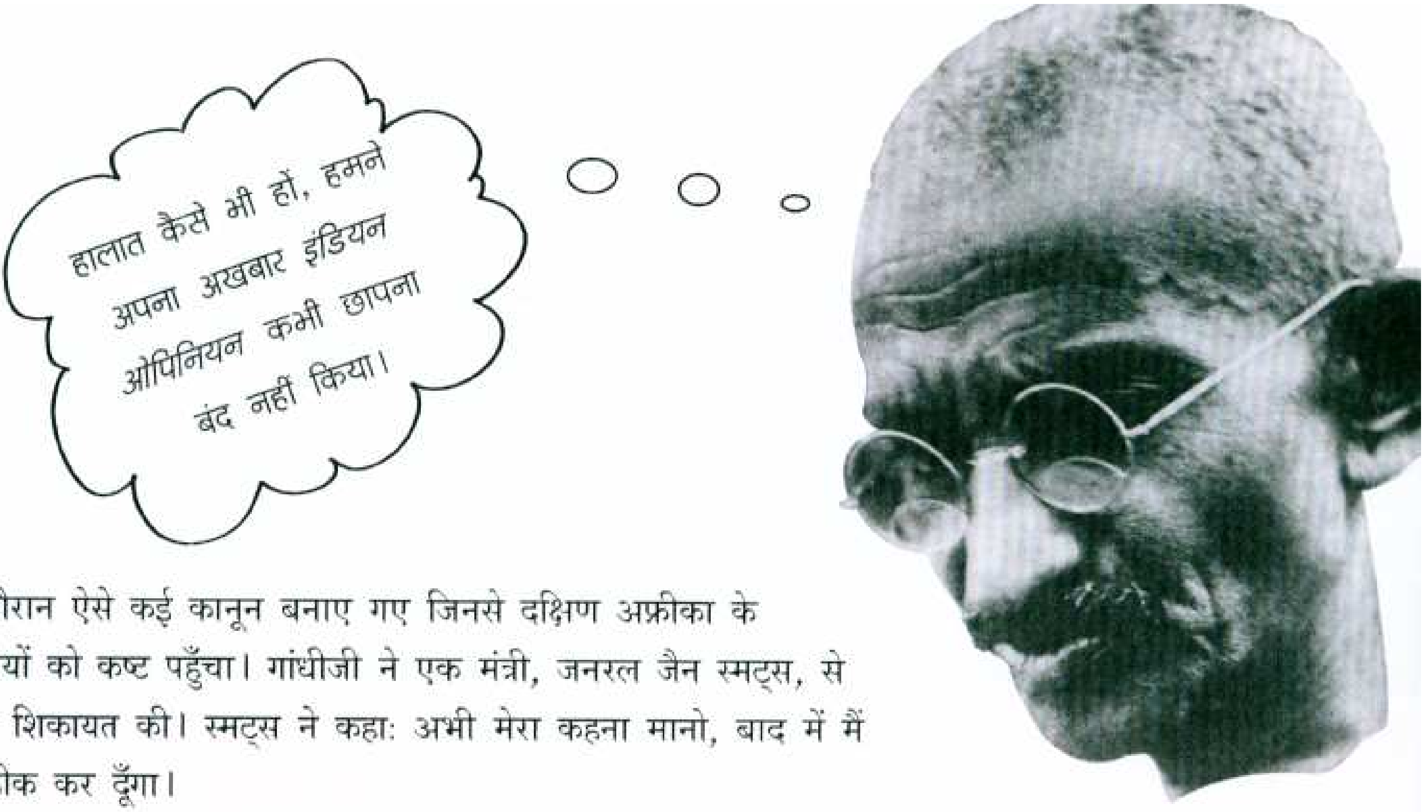

इस दौरान ऐसे कई कानून बनाए गए जिनसे दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों को कष्ट पहुँचा। गांधीजी ने एक मंत्री, जनरल जैन स्मट्स, से इनकी शिकायत की। स्मट्स ने कहा: अभी मेरा कहना मानो, बाद में मैं सब ठीक कर दूँगा।

मगर ऐसा हुआ नहीं और क्रूर कानून बने रहे। उदाहरण के लिए, भारतीयों को अपनी उंगलियों के निशान सरकार को देने पड़ते और केवल ईसाई विवाह ही मान्य थे। दक्षिण अफ्रीका में भारतीय कई तरह के कष्ट सह रहे थे। इसको रोकने के लिए कुछ तो करना ही था। कोई ज़बरदस्त आंदोलन।

उन दिनों भारतीयों को आज़ादी से घूमने की इजाज़त नहीं थी। जैसे कि नेटाल और ट्रांसवाल के बीच की सीमा पार करने की अनुमति उन्हें नहीं थी। अब खुलेआम हज़ारों औरतों, मर्दों और बच्चों ने भी इस सीमा को पार किया। उनके पास न अनुमति थी न कोई कागज़ात। उनके नेता थे गांधीजी।

पुलिस उन्हें सीमा पार करने से रोक नहीं पाई, इसलिए उन्हें गिरफ़्तार करने लगी। बा को भी गिरफ़्तार कर तीन महीनों के लिए जेल भेजा गया। कैदियों से जेल खचाखच भर गए। मगर फिर भी लोग सीमा पार कर कानून तोड़ते रहे।

अंत में दक्षिण अफ्रीका की सरकार को झुकना पड़ा – थोड़ा सा। यह थोड़ा ही एक बहुत बड़ी जीत थी।

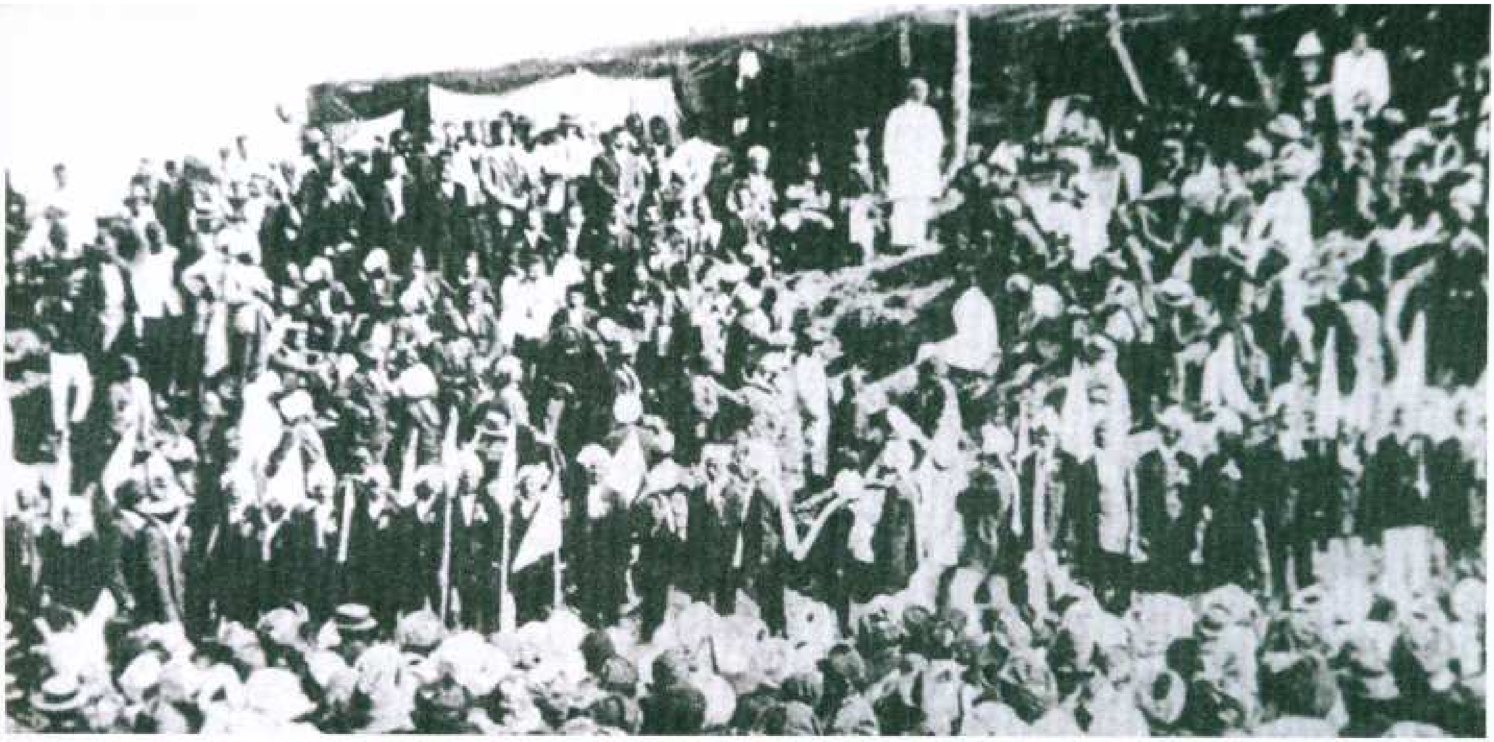

अब गांधीजी भारत लौटने को तैयार थे।

गांधीजी के विदाई समारोह में हज़ारों लोग इकट्ठा हुए – डरबन और प्रिटोरिया में, जोहानसबर्ग और केप टाउन में। उन्होंने गांधीजी को 'देसभक्त महात्मा' का खिताब दिया।

उन दिनों लाउडस्पीकर नहीं थे। गांधीजी की आवाज़ भी बहुत बुलंद नहीं थी। मगर जब भी वे बोलते, लोग उनकी बात सुनते। बात सुनाई नहीं देती, तब भी लोग समझ जाते।

गांधीजी, बा और बच्चे जहाज़ में बैठकर भारत लौट रहे थे जब पहला महायुद्ध छिड़ गया। जहाज़ पर ही गांधीजी ने बांग्ला भाषा सीखनी शुरू की। पूर्व जहाज़ी यात्राओं के दौरान वे थोड़ी-बहुत तमिल और उर्दू पहले ही सीख चुके थे।

दक्षिण अफ्रीका में बीस साल से भी ज़्यादा समय बिताने के बाद गांधीजी परिवार सहित 9 जनवरी 1915 को स्वदेश लौटे। इस बीच बहुत कुछ बदल चुका था। सत्रहवी सदी में ईस्ट इंडिया कंपनी के रूप में ब्रिटिश आए और धीरे-धीरे देश पर राज भी करने लगे। वे अभी भी भारत पर राज कर रहे थे।

गांधीजी बहुत साल तक बाहर रहे थे। उन्होंने गोपालकृष्ण गोखले से पूछा: मैं यहाँ क्या करूँ? गोखले ने गांधीजी से कहा: जाओ और असली भारत को खोजो। सो गांधीजी और कस्तूरबा अपने प्रिय अंग्रेज़ मित्र सी. एफ़. एंड्रूज़ के साथ रेलगाड़ी के ठसाठस भरे तीसरे दर्जे में बैठकर भारत दर्शन को निकले। उन्होंने आम आदमी की ज़िंदगी को करीब से देखा।

ब्रिटिश राज द्वारा अपने हित के लिए बनाई रेल का अगले तीस सालों में गांधीजी ने खूब उपयोग किया। उन्होंने दूर-दराज के शहरों और गाँवों का दौरा किया और लोगों से बातचीत की, भाईचारे और आत्म-निर्भरता का संदेश दिया, और स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ जाने की अपील की।

गांधीजी प्रेम से बोलते और आम आदमी जैसे दिखते थे। जब लोगों को पता चलता कि गांधीजी आ रहे हैं तो वे हज़ारों की तादाद में इकट्ठा होते और महात्माजी के दर्शन के लिए अपने बच्चों को कंधों पर बिठाते। अगर गांधीजी सो रहे होते तो वे उन्हें जगाते। गांधीजी इसका बुरा न मानते।

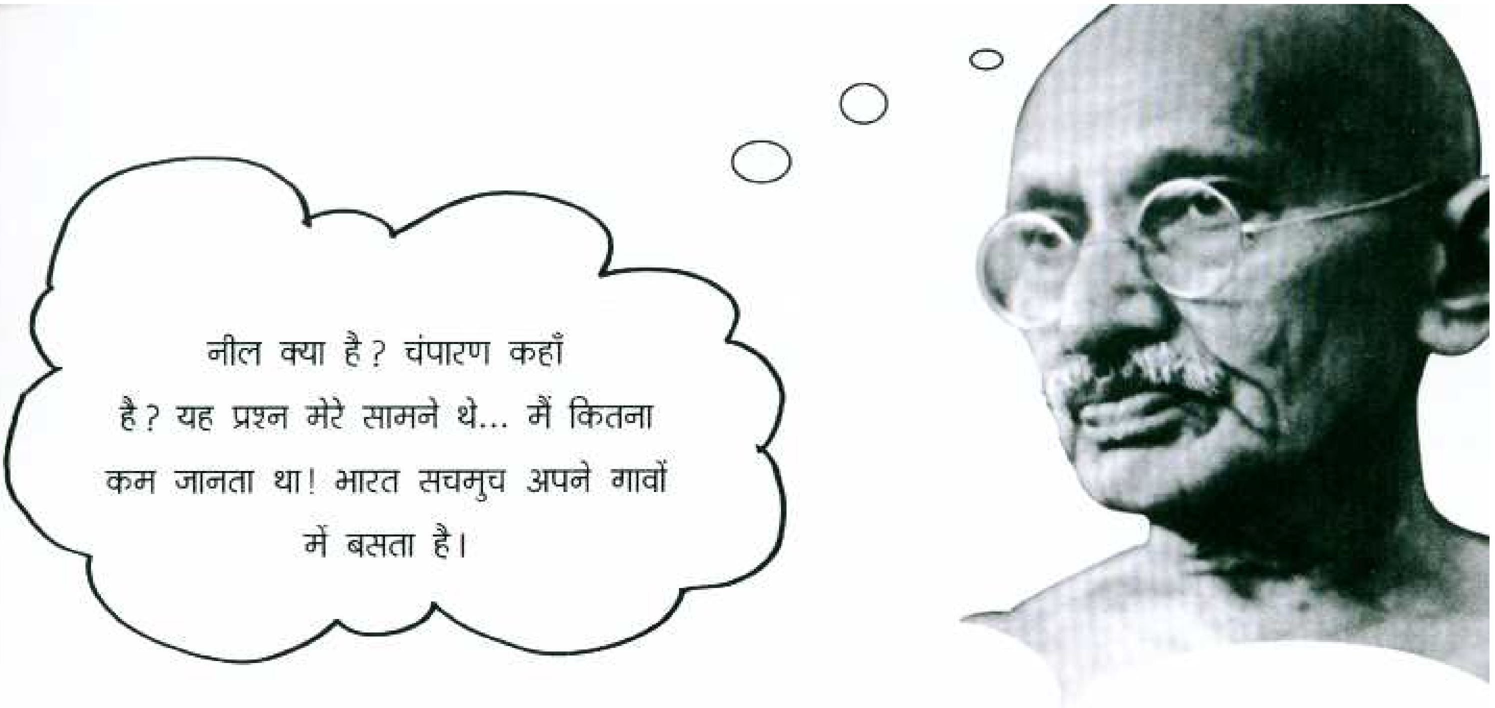

नील की खेती करने वाले गरीब किसानों ने जब मदद माँगी तब उनके कष्टों को समझने के लिए गांधीजी खुद चंपारण गए। अहमदाबाद के मिल-मज़दूरों ने जब सहायता माँगी तो गांधीजी अनशन पर बैठे और उन्होंने मज़दूरों को हड़ताल जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया। पूरब हो या पश्चिम, हर तरफ़ से लोग गांधीजी को अपने दुख-दर्द सुनाने आते।

बहुत लगन और मेहनत से गांधीजी सब जानकारी एकत्रित करते। फिर सारे तथ्यों को समझने के बाद लोगों को हल सुझाते।

सितंबर 1921 में एक दिन जब वे मदुरई में थे तब गांधीजी ने सदा के लिए अपनी टोपी फेंक दी और कुर्ता उतार दिया। उस दिन के बाद से वे किसानों की सादी पोशाक, धोती पहनने लगे। उस दिन के बाद से भारत की आम जनता का उनमें विश्वास बढ़ गया। न केवल गांधीजी उनके जैसे दिखते थे, वे उनकी ही ज़िंदगी जीते थे, उनकी पीड़ा समझते थे और उनके लिए संघर्ष करते थे।

इंडियन नैशनल कांग्रेस के नेता भी गांधीजी पर भरोसा करने लगे। वे गांधीजी की राय लेते और उनसे स्वतंत्रता आंदोलन की अगुवाई करने की अपील करते।

शांत दृढ़ता से गांधीजी ने इन नेताओं को सादगी और सेवा का सबक सिखाया, पहले साबरमती आश्रम और फिर वर्धा के सत्याग्रह आश्रम से। वे रोज़ाना सूत कातते और हर शाम सामूहिक प्रार्थना करवाते। वे नियमित रूप से लेख लिखते और तुरंत पत्रों के उत्तर भी देते। वे खुद अपने साथ, और दूसरों के साथ भी सख्ती से पेश आते। उन्होंने दुनिया के सबसे शक्तिशाली नेताओं के सामने भारत के लोगों की समस्याएँ रखीं।

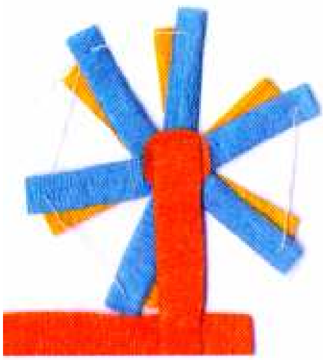

कई बार गांधीजी की बात लोगों को समझ में न आती। कई बार गांधीजी से गलतियाँ भी होतीं। उनका मानना था कि सत्य भगवान है और इसमें उनका अडिग विश्वास था। वे हमेशा सत्य को खोजते और बोलते।

गांधीजी का बच्चों के साथ एक विशेष संबंध था। आश्रम में जब बच्चों की माताएँ अन्य कामों में व्यस्त होतीं तो वे खुशी से बच्चों की देखभाल करते।

ऐसा लगता था कि औरों की देखभाल में व्यस्त रहने के कारण, उन्हें अपने बच्चों की देखभाल का समय ही नहीं मिला। लेकिन तब तक वे बापू बन चुके थे – सारे भारत के बापू। दक्षिण अफ्रीका और भारत के आश्रमों के बच्चों की तरह ही गांधीजी के बच्चों ने भी उनको भरपूर सहयोग दिया। वे भी जेल गए।

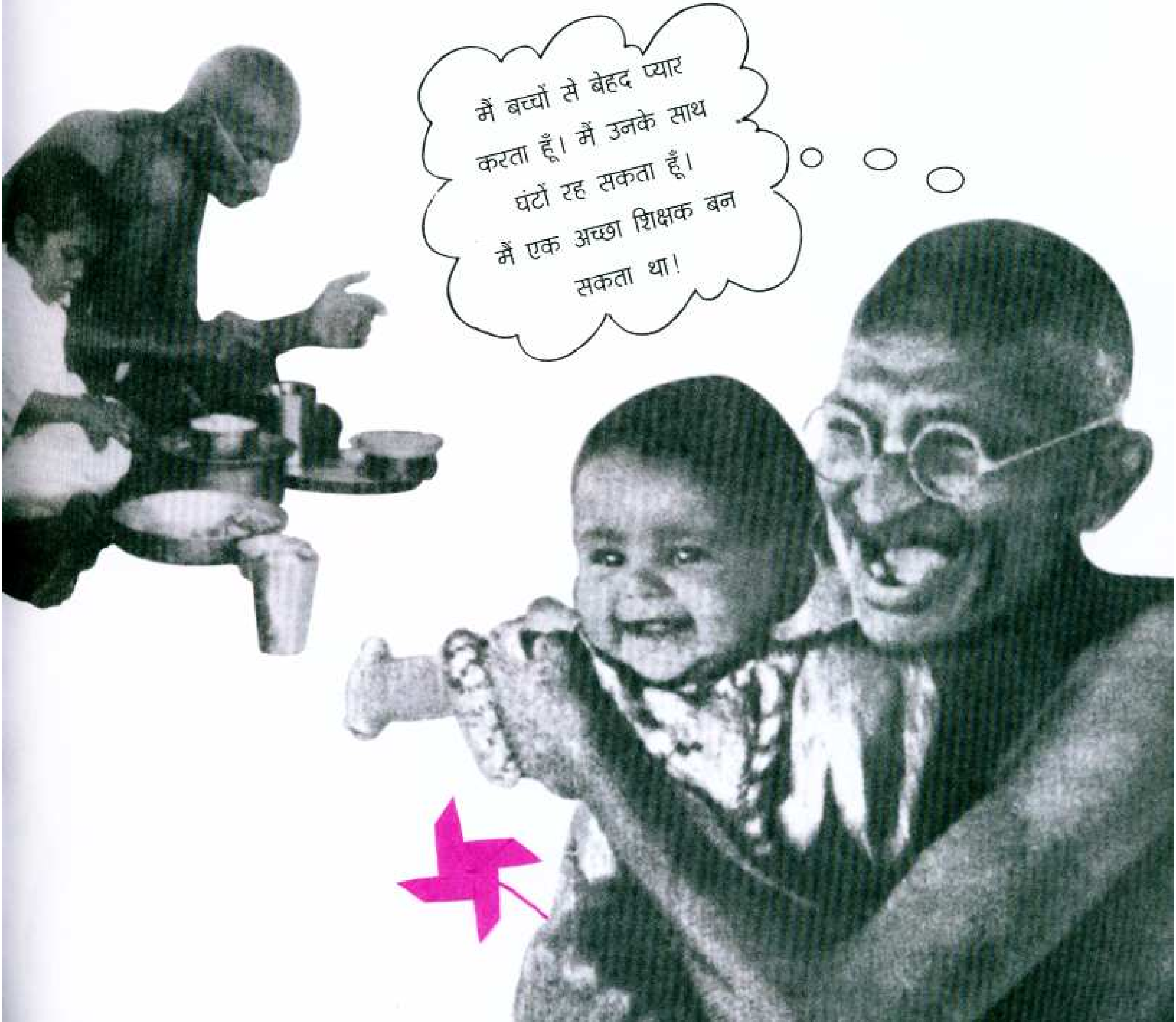

भारत का स्वतंत्रता आंदोलन शांतिपूर्ण था, फिर भी हज़ारों लोग गिरफ़्तार हुए। जब बापू नौजवानों और युवतियों को जान-बूझकर जेल भरने के लिए उकसाते, तो बा को इस बात पर गुस्सा आता!

सच तो यह था कि बहुत से लोग बापू के लिए कुछ भी करने को तैयार थे। जैसे महादेव देसाई। महादेवभाई बरसों गांधीजी के सचिव रहे। 1942 में उनकी मृत्यु हुई। उनका परिवार बापू और बा के साथ आश्रम में ही रहता था। महादेवभाई ने गांधीजी जैसे कपड़े तो नहीं पहने, पर वे भी सादा, सरल जीवन बिताते और समाज सेवा करते थे।

या फिर लंबा-चौड़ा, बहादुर, ख़ाँ अब्दुल गफ़्फार ख़ाँ। वे नार्थवेस्ट फ्रंटियर प्रॉविन्स के लोगों के बीच काम करते थे। उन्हें फ्रंटियर गांधी के नाम से जाना जाता था।

हज़ारों स्त्री-पुरुष अपना सब कुछ छोड़ देश की सेवा में लग गए। बापू ने बुलाया, बस, वे आ गए।

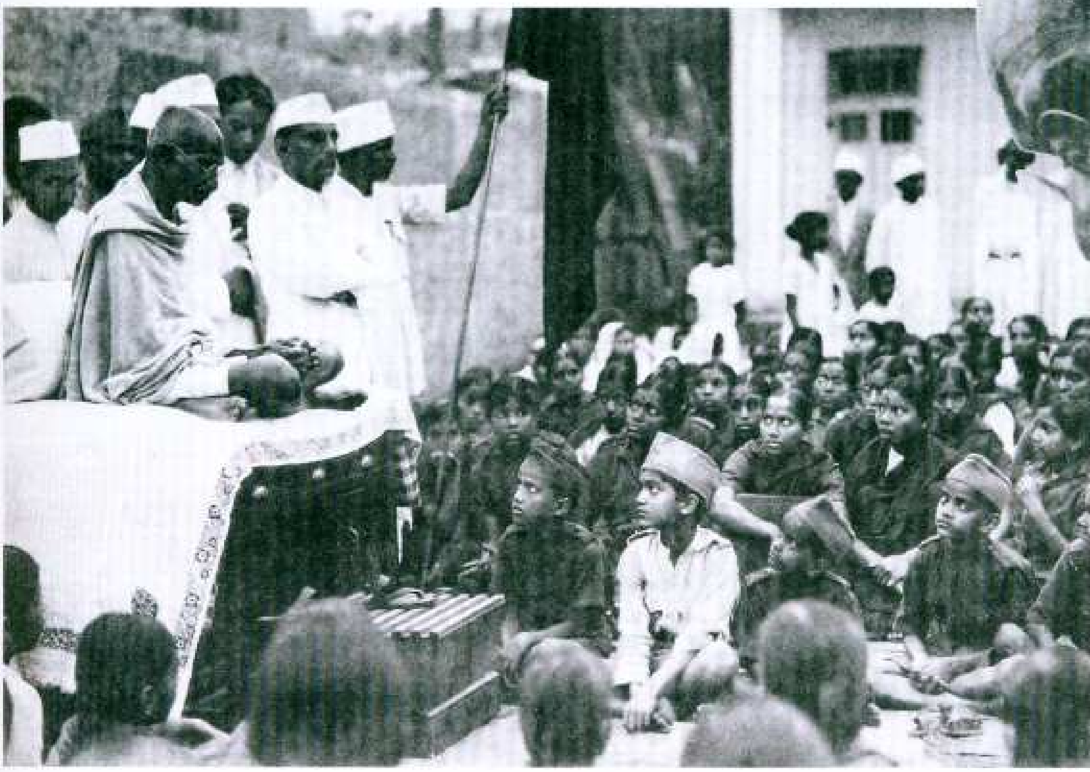

बच्चों ने भी छोटे-छोटे काम किए जो वे कर सकते थे। उन्होंने गाँवों और शहरों में वानर-सेना संगठित की जो सूचना पहुँचाने, दान जमा करने और तकली से सूत कातने जैसे काम करती।

कई बच्चों ने कुर्बानियाँ भी दीं। एम. एन. जोइस का किस्सा सुनिए। एक दिन जब वह स्कूल से घर लौट रहा था तब उसने चौराहों पर आग जलती हुई देखी। यह क्या हो रहा है? उसने पूछा। हम लोग विदेशी कपड़ा जला रहे हैं, एक आदमी ने उत्तर दिया।

उन दिनों बहुत से लोग इंग्लैंड की मिलों में बने कपड़े के वस्त्र पहनते थे। गांधीजी लोगों से आग्रह कर रहे थे कि वे केवल स्वदेशी, यानी भारत में बना कपड़ा, खद्दर ही इस्तेमाल करें।

यह देख जोइस ने तुरंत अपनी कमीज़, निक्कर और बनियान उतार कर उन्हें आग में झोंक दिया! जब वह लगभग नंगा घर लौटा तो उसकी माँ को ज़्यादा खुशी नहीं हुई, पर जोइस तो जैसे सातवें आसमान पर!

बापू को अपने काम में बा, नज़दीकी परिवार और मित्रों का सहारा था। उनके सहयोग से बापू ने दक्षिण अफ्रीका और भारत में यह दिखाया कि किसी को मारे या चोट पहुँचाए बिना अन्याय के खिलाफ़ कैसे लड़ा जा सकता है। उन्होंने अपने अधिकार के लिए, और सत्य की लड़ाई के लिए, लोगों को जेल जाना सिखाया। और जब भी वे किसी को गलत काम करता देखते, तो उसके लिए उपवास करके खुद को सज़ा देते।

बापू को कष्ट सहते देख, लोगों में बदलाव आया। हिन्दू और मुसलमान ने एक होने की कोशिश की, ब्रिटिश सरकार कमज़ोर पड़ गई और समझौते के लिए सामने आई। एक बार गांधीजी के पुराने दुश्मन जनरल जैन स्मट्स ने भी उन्हें टेलीग्राम भेजकर उनसे उपवास तोड़ने की विनती की!

सन् 1930 में, ब्रिटिश सरकार ने गरीब भारतीयों पर नमक का टैक्स लगाकर उन पर बहुत बड़ा अन्याय किया। नमक ही ऐसा स्वाद था जिसे गरीब अपने भोजन में मिला सकते थे। और अंग्रेज़ इसे भी छीनना चाहते थे।

वे ऐसा नहीं कर सकते, गांधीजी ने कहा। उन्होंने गहराई से सोचा और फिर एक ऐसी योजना बनाई जो बहुत आसान-सी थी पर कमाल की! उन्होंने अहमदाबाद से लेकर समुद्र तट पर बसे एक छोटे-से गाँव दांडी तक की पदयात्रा की।

दांडी में गांधीजी ने एक मुट्ठी भर नमक उठा कर उसे वहाँ जमा लोगों को दिखाया।

दांडी में चारों तरफ़ से फ़ोटो खिंचे। तालियाँ बजीं।

जल्दी ही भारत के लंबे तटवर्ती इलाकों में लोगों ने नमक इकट्ठा कर उसे बेचना शुरू कर दिया। उन्होंने नमक के कानून को तोड़ा। पुलिस ने आकर उन्हें रोका पर किसी ने बदले में हाथ नहीं उठाया।

यह समाचार अखबारों और रेडियो के ज़रिए दुनिया भर में फैला। गांधीजी अब हीरो बन गए। इंग्लैंड में भी मिल-मज़दूरों और आम लोगों ने गांधीजी की प्रशंसा की, और जब उन्हें देखा तब उनसे हाथ मिलाना चाहा।

द्वितीय महायुद्ध के कारण 1939 से लेकर 1945 तक दुनिया भर में तबाही मची। इंग्लैंड युद्ध में पूरी तरह से फँसा था। भारत में स्वतंत्रता आंदोलन चलता रहा लेकिन कुछ धीमे स्तर पर। हर रोज़ गांधीजी चरखे पर सूत कातते। सही दृष्टि पाने के लिए यही उनकी साधना थी। ब्रिटिश शासन को खत्म करने के लिए वे इसी प्रकार ध्यान लगाकर नए और शांतिपूर्ण तरीके खोज पाए।

1944 में जब बा और गांधीजी पुणे के आगा खाँ पैलेस में बन्दी थे तब दुर्भाग्यवश बा का देहांत हो गया। अपने लाखों प्रियजनों से घिरे रहने के बावजूद, गांधीजी अत्यंत अकेले थे। जब उन्होंने बा के साथ रहना शुरु किया था तब दोनों की आयु सिर्फ़ 13 वर्ष की थी। अब दोनों लगभग 75 साल के थे। उन्होंने 62 साल साथ बिताए थे।

लोग अब अधीर होने लगे। वे अब और ज़्यादा इंतज़ार नहीं कर सकते थे।

उनकी स्वतंत्रता में सिर्फ़ एक बाधा थी – लोगों में फूट डालकर राज करने की ब्रिटिश चाल। इससे ऐसे हालात बन गए जिनमें स्वतंत्रता के लिए देश को दो टुकड़ों में बाँटना ज़रूरी हो गया।

सड़कों पर, गाँवों और शहरों में हिन्दू लोग मुसलमानों को मारने लगे, और मुसलमान, हिन्दुओं को।

गांधीजी इस लड़ाई को रोकने के लिए अनशन पर बैठे। पर इस बार हर कोई उनकी बात नहीं सुन रहा था। बहुत से मुसलमानों ने अपना सामान बाँधा। उनमें से कुछ ने पश्चिमी पाकिस्तान, और कुछ ने पूर्वी पाकिस्तान की ओर पलायन किया। बहुत से हिन्दू भी उन जगहों से भारत आ गए।

अंत में अगस्त 1947 में भारत और पाकिस्तान, ब्रिटिश शासन से आज़ाद हुए। मुहम्मद अली जिन्ना पाकिस्तान के कायदे-आज़म बने और जवाहरलाल नेहरू भारत के प्रधान मंत्री।

बहुत साल बाद, पूर्वी पाकिस्तान बांग्लादेश बना।

मैं चाहता था कि मेरा जीवन ही मेरा संदेश हो। मुझे इसके लिए और मेहनत करनी चाहिए थी... और मेहनत...

गांधीजी की तमाम कोशिशों के बाद भी वे भारत के बंटवारे को रोक नहीं सके। वे अब क्या कर सकते थे?

बस, एक ही काम बाकी था। उन्होंने अपनी लाठी उठाई और देश के उन सभी भागों का दौरा किया जहाँ कत्लेआम हुआ था या अभी भी जारी था। अक्सर वे एक घर से दूसरे घर नंगे पाँव ही जाते। कई लोग उन्हें गालियाँ सुनाते, कई उनके पैर पकड़कर रोते। वे हर जगह रुककर लोगों का दुख-दर्द सुनते और उनके घरों में रात बिताते।

गांधीजी अपनी मौजूदगी और प्रार्थनाओं से लोगों को दिलासा देते। भारत के दो टुकड़े हो गए हैं इस सच्चाई को झेल पाना गांधीजी के लिए कठिन था। उन्हें लगा कि उन्होंने लोगों के विश्वास को ठेस पहुँचाई है।

परंतु दुनिया आज भी उन्हें एक ऐसे इंसान के रूप में याद करती है जिसने सिखाया कि प्रेम और शांति से कैसे जीता जा सकता है। विश्व के बहुत से नेताओं ने गांधीजी के जीवन से प्रेरणा ली। अमेरिका में मार्टिन लूथर किंग, दक्षिण अफ्रीका में नेलसन मंडेला, और तिब्बतियों के धार्मिक गुरु दलई लामा – सभी ने कहा है कि उन्होंने महात्मा गांधी के जीवन से बहुत कुछ सीखा।

जब गांधीजी का जनवरी 30, 1948 को देहांत हुआ तो वे शाम की प्रार्थना में शामिल होने की जल्दी में थे। उन्हें देरी हो गई थी और और उन्हें देर से कहीं भी पहुँचना बेहद नापसंद था।

एक बार पहले भी समय पर पहुँचने के लिए उन्होंने किसी की साईकल ली और प्रार्थना के लिए भागे। जबकि सालों से उन्होंने साईकिल को हाथ भी नहीं लगाया था!

इस बार जब वे समय पर पहुँचने की हड़बड़ी में थे, तो उनके शरीर में तीन गोलियाँ लगीं और वे गिर पड़े।

पूरे देश में सन्नाटा छा गया। यह कैसे हुआ? क्यों हुआ?

मगर दुनिया जानती है कि उन्होंने सही रास्ता दिखाया, और दुनिया को यह बात याद है।

अपने लंबे जीवनकाल में गांधीजी ने बहुत से लोगों के खिलाफ़ लड़ाईयाँ लड़ीं। पर इन लोगों से उन्होंने गहरी दोस्ती भी बनाए रखी।

कुछ साल तक जैन स्मट्स गांधीजी द्वारा दक्षिणी अफ्रीकी जेल में बनाई सैंडिल पहनते रहे। स्मट्स ने कहा कि वे उन सैंडलों को पहनने के काबिल नहीं थे।

गांधीजी ने अंग्रेज़ों से बहुत कुछ सीखा। उनकी वकालत की ट्रेनिंग भी इंग्लैंड में ही तो हुई थी।

मुझे अंग्रेज़ों से प्यार है, मैं सिर्फ़ उनके शासन के खिलाफ़ हूँ, वे कहते, और भारत के आखरी ब्रिटिश वाइसरॉय की पत्नी, एड्वीना माउंटबैटन के कंधे पर हाथ रखकर चलते।

इसी लिए उनकी कहानी हमेशा दोहराई जाएगी। क्योंकि गांधीजी ने दिखाया कि गलत को 'ना' कहना सही है। उन्होंने सिखाया कैसे 'ना' कह कर भी दोस्ती कायम रह सकती है।

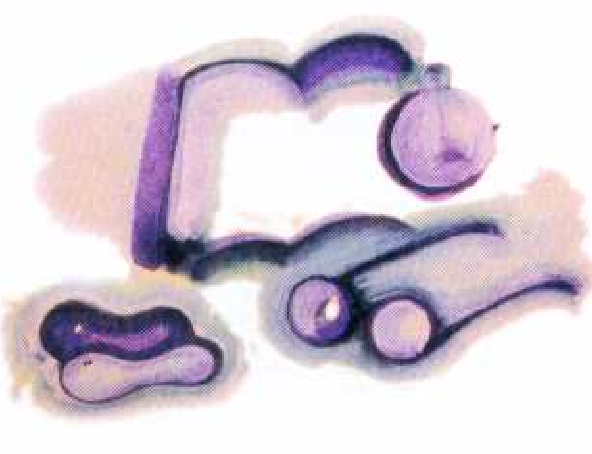

We deeply deplore the recent acts of lawlessness and violence that have brought the utmost disgrace on the fair name of India and the greatest misery to innocent people, irrespective of who were the aggressors and who were the victims.

We denounce for all time the use of force to achieve political ends, and we call upon all the communities of India, to whatever persuasion they may belong, not only to refrain from all acts of violence and disorder; but also to avoid both in speech and writing, any words which might be construed as an incitement to such acts.

M.A. Jinnah
15/4/47

M.K. Gandhi

कौन था वह इंसान जिसने सारी दुनिया को चकाचौंध किया? उनका जन्म भले ही एक शताब्दी पहले हुआ हो परंतु उनके विचार-आदर्श आज भी सार्थक, समसामयिक और प्रभावी हैं। फ़िल्में, पुस्तकें, संचार माध्यम रोज़ाना उन्हें हमारे घरों में लाते हैं। संयुक्त राष्ट्र ने उनके जन्मदिन 2 अक्टूबर को अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रुप में मानने की घोषणा की है। हम उन्हें आज के बच्चों तक कैसे पहुँचाएँ? उनकी प्रेरक कहानी को कैसे सुनाएँ जिससे कि वह सिर्फ़ इतिहास का एक पाठ न बने?

तस्वीरों में गांधी घिसी-पिटी परिपाटी से हटकर स्वयं मोहनदास करमचंद गांधी के जीवनक्रम और भावनाओं से रु-ब-रु करती है। गांधीजी के प्रति स्नेह रखते हुए भी लेखिका ने सूक्ष्मता से सत्य और प्रेम तथा जो गांधीजी के लिए अहम विचार थे, उन्हें अपनाया। पुस्तक की तस्वीर इन बिंदुओं को और व्यापक बनाती हैं। चित्रों में लिखे संवादों से हमें गांधीजी के अंदरूनी विचारों की झलक मिलती है। हाथ के बने रंगीन चित्र, पुरानी तस्वीरों को निखारती हैं। **तस्वीरों में गांधी** गांधीजी के प्रभामंडल से हटकर हमें एक युगपुरुष का अंतरंग दर्शन कराती है।

संध्या राव भारतीय बाल पुस्तकों की सर्वश्रेष्ठ लेखिकाओं में से एक हैं। उनकी पुस्तकों को अन्तर्राष्ट्रिय ख्याति और पुरस्कार मिले हैं। उन्होंने गांधीजी के बारे में जितना अधिक शोध किया उतना ही उन्हें लगा कि गांधीजी के ऊपर कोई एक अकेली किताब अपूर्ण होगी। इसलिए उन्होंने इस पुस्तक के साथ-साथ *माई गांधी स्क्रैपबुक* भी रची – इसमें गांधीजी पर आधारित, हर आयुवर्ग के लिए कई मज़ेदार गतिविधियाँ हैं।

अरविंद गुप्ता बच्चों के लिए वैज्ञानिक खिलौने बनाते हैं। उन्होंने अभी तक सौ से भी अधिक पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद किया है।

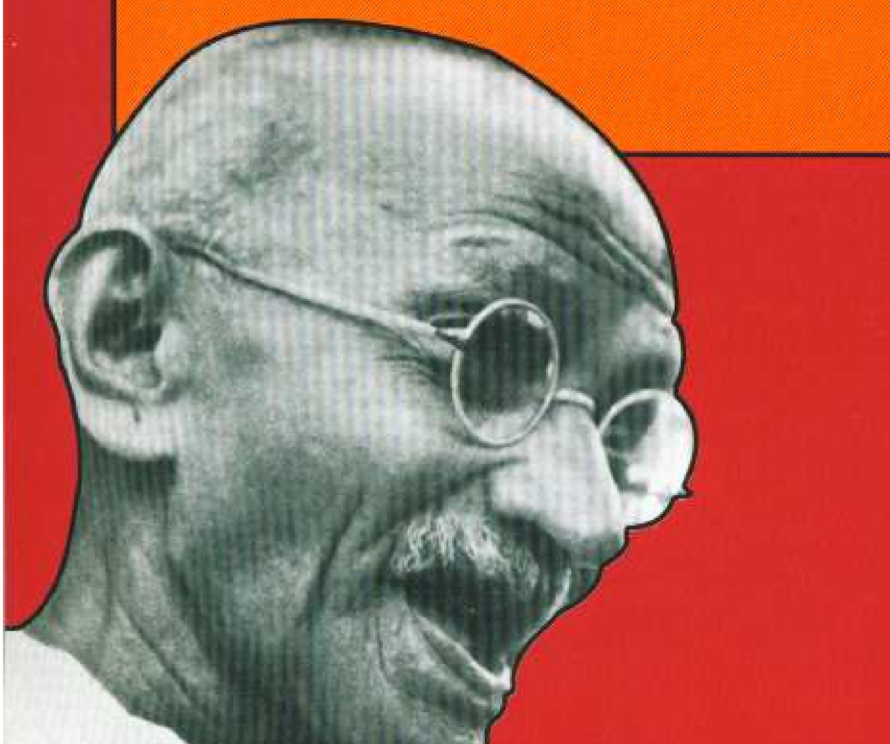

HINDI
For all ages
Rs 120

ISBN 81-8146-377-3
9788181463777